International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 15 Issue 05, May 2025,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पंजाब से प्राप्त विदेशी शासकों कें सिक्कें: एक सिंहवलोकन (लगभग 200 ई.पू. से 200 ई.सन् तक)

संजीव कुमार
शोधर्थी, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एंव पुरात्तव विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र
डॉ. भगत सिंह
प्रोफेसर, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एंव पुरात्तव विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

सार: प्रस्तुत-शोध पत्र वर्तमान भारतीय राज्य पंजाब से प्राप्त प्राचीन विदेशी शासकों कें सिक्कों पर आधारित है। जिसमें मुख्य रूप से सोने, रजत व तांबा धातु के आहत व ढ़लवा प्रकार के सिक्कों का वर्णन आता है, जिनमें, हिंद-यूनानी, शक-पहलवों और कुषाणों, से संबंधित सिक्के, जिनका समय दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व तथा दूसरी शताब्दी ईस्वी के बीच माना जाता है। जो इस क्षेत्र से प्रकाश में आये तथा इसके बाद कुषाण परंपरा को धारण किये हुण सिक्कें भी इस क्षेत्र से प्राप्त हुऐ। जिनका वर्णन इस शोध पत्र में विस्तार पूर्वक किया गया है।

संकेतशब्द: हिंद-यूनानी, शक-पहलव, कुषाण, मुद्राशास्त्री, पुरातात्विक, ब्राह्मी, खरोष्ठी ।

शोध पद्धति: प्रस्तुत शोध पत्र के शीर्षक से संबंधित विभिन्न संग्रहालयों में संग्रहित सिक्कों, प्रकाशित मुद्रा सूची, प्रकाशित पुस्तकों, पत्रिकाओं, साहित्यिक स्रोतों, फोटोग्राफों एवं मानचित्रों का व्यवस्थित एवं व्यापक अध्ययन कर शोध पत्र को प्रभावी एवं मौलिक बनाने का प्रयास किया गया है।

विषय विस्तार:

भारत के पंजाब क्षेत्र से प्राप्त होने वाले सिक्कों में हिंद-यूनानी, शक-पहलवों और कुषाणों

[1] से संबंधित सिक्के आमतौर पर दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व तथा दूसरी शताब्दी ईस्वी के बीच प्रचलन में थे। जिसमें राजा को अग्रभाग पर और एक देवता को पृष्ठ भाग की ओर दर्शाया गया है[2]। प्रस्तुत शोध पत्र में विषय अनुसार विविध पक्षों को वर्णन करने का प्रयास किया गया है। पंजाब किसी जमाने में विस्तृत भारत-ईरानी क्षेत्र का हिस्सा रहा है। बाद के वर्षों में यहां मौर्य, बैक्ट्रियन, यूनानी, शक, कुषाण, गुप्त जैसी अनेक शक्तियों का उत्थान और पतन हुआ। वर्तमान में पंजाब उत्तर-पश्चिम भारत का एक राज्य है जो वृहद्तर पंजाब क्षेत्र का एक भाग है। इसका दूसरा भाग पाकिस्तान में है। पंजाब क्षेत्र के अन्य भाग (भारत के) हरियाणा और हिमाचल प्रदेश राज्यों में हैं। इसके पश्चिम में पाकिस्तानी पंजाब, उत्तर में जम्मू और कश्मीर, उत्तर-पूर्व में हिमाचल प्रदेश, दक्षिण और दक्षिण-पूर्व में हरियाणा, दक्षिण-पूर्व में केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ और दक्षिण-पश्चिम में राजस्थान राज्य हैं। राज्य की कुल जनसंख्या

27,743,338 है एंव कुल क्षेत्रफल 50,362 वर्ग किलोमीटर है। राज्य के अक्षांशीय और लंबवत विस्तार क्रमशः 29.30 डिग्री उत्तर से 32.32 डिग्री उत्तर, और 73.55 डिग्री पूर्व से 76.50 डिग्री पूर्व है। केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ पंजाब की राजधानी है जोकि हरियाणा राज्य की भी राजधानी है[3]। पुरातात्विक साक्ष्यों के अंतर्गत मुद्राशास्त्री साक्ष्यों का निश्चय ही अपना विशिष्ट स्थान है ये सिक्के साहित्य एवं पुरातत्व की अन्य प्रवृत्तियों से ज्ञात इतिहास का कभी समर्थन कर रहे होते हैं और कभी किसी युग राजवंश से अथवा राजा विशेष पर प्रकाश डालने अथवा इतिहास लेखन में अपने आप में ही समर्थ होते है ।

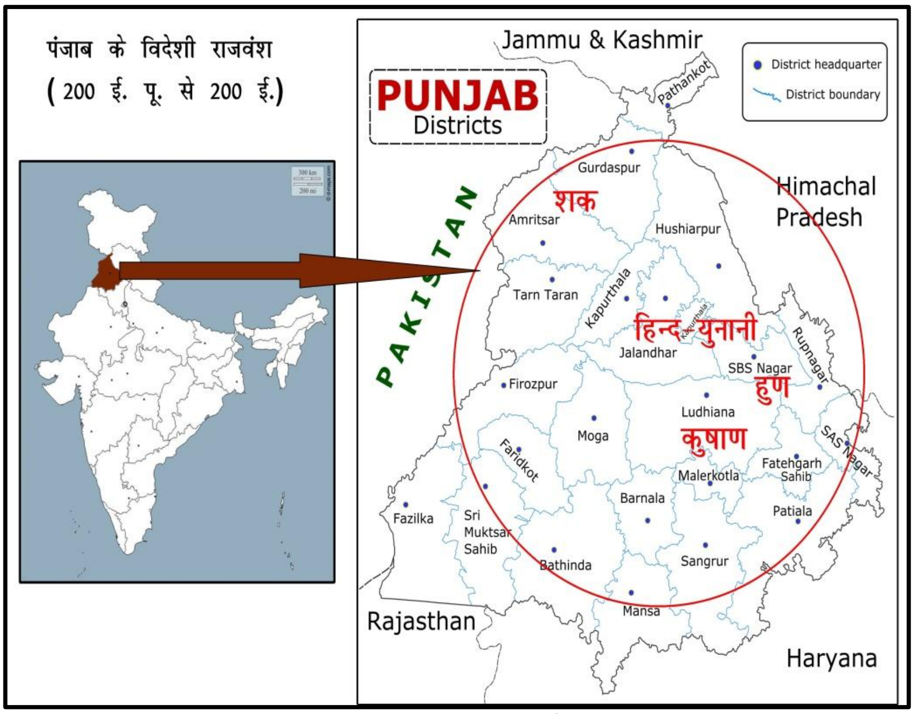

हिंद-युनानी सिक्कें :

मौर्यो के बाद भारत पर विदेशी आक्रमणों की श्रृंखला में सर्वप्रथम युनानी शासकों का नाम आता है जिन्हें प्राचीन ग्रन्थों में यवन कहा गया है। हिन्दुकुश पर्वत व आक्सास के मध्य बैक्ट्रिया अत्याधिक उपजाऊ प्रदेश था, जिसे स्ट्रैबो ने "आरियाना का गौरव" कहा है। डेमेट्रियस ने 183 ई. पू. सिन्ध व पंजाब पर अधिकार करके साकल को राजधानी बनाकर भारत में हिन्द-यवन राज्य की स्थापना की। कालान्तर में यह साम्राज्य दो कुलों, डेमेट्रियस तथा यूक्रेटाइडीज में विभाजित हो गया। यूक्रेटाइडीज ने तक्षशिला को राजधानी बनाया। और डेमेट्रियस कुल के मिनेण्डर ने साकल को राजधानी बनाया, जो शिक्षा व समृद्धि में पाटलिपुत्र के समान थी[4]। इसके सिक्के भड़ौच से मिले जिन पर धर्मचक्र का अंकन मिलता है। बाद में मिनेण्डर ने बौद्धभिक्षु नागसेन से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था[5]। भारत व बैक्ट्रिया पर शासन करने वाले शासकों का इतिहास जानने के लिए हालांकि हमारे स्रोत बहुत कम है।। लेकिन फिर भी सिक्कों के माध्यम से हिन्द-यूनानी शासकों के विषय में काफी जानकारी प्राप्त होती है। जो कि इतिहास के पुनः निर्माण में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है[6]। हिन्द-यूनानी शासकों के सिक्कों का आकार गोल व चौकोर है। द्विभाषीय लिपि का प्रयोग पहली बार इन्हीं सिक्कों पर किया गया, इन पर ब्राह्मी व खरोष्ठी लिपि में लेख लिखे हैं। कुछ सिक्कों पर खरोष्ठो व यूनानी लेख की जगह कई बार ब्राह्मी व यूनानी लेख भी अंकित किये गये है। जेम्स प्रिंसेप ने खरोष्टी के अक्षरों को हिन्द-यूनानी सिक्कों की सहायता से पढ़ा था[7]। ये सिक्के अधिकतर चांदी व तांबे में मिलते है, यद्यपि कुछ राजाओं ने सोने, कांसे, निकल, चांदी आदि धातुओं

में भी सिक्कें जारी किए। सोने व चांदी के सिक्कों के अग्रभाग पर एक गोल किनारी में राजा का चित्र छपा हुआ है। ये चित्र पूरी तरह वास्तविक थे। कलाकारों ने इन शाही चित्रों को अत्यधिक सुन्दरता और शालीनता प्रदान की है[8]। इन सिक्कों का पृष्ठभाग न्यादातर किसी देवता को दर्शाता है। हिन्द यूनानी राजाओं के सिक्के पंजाब के विभिन्न भागों में पाये गये हैं।

1. प्राप्ति स्थान पंजाब आकृति अण्डाकार, व्यास 2.6 X 2.4 सें.मी., भार 16.9 ग्राम हैं (चित्र–1)।

अग्रभाग: बिन्दुओं के घेरे में शेर की चमड़ी के साथ दाई तरफ जवान हैरेक्लस का सिर हैं।

पृष्ठभाग:ज्यूस सिंहासन (चट्टान) पर बैठा है, उराके बायें हाथ की तरफ बाज है, दायां हाथ फैला हुआ है, बायें हाथ में राजदण्ड है, सिक्कें के दायीं तरफ ग्रीक भाषा में (ALEXANDROU) ज्यूस के सीधे हाथ के नीचे एक चिन्ह बना है[9]।

हिन्द–युनानी सिक्का (चित्र–1)

विशेष संर्दभ: देवेन्द्र हाण्डा ने ऐसा ही सिक्का सरदार हरबंस सिंह मंगत निवासी पुलाल के यहां देखा, जोकि लुधियाना से 30 कि. मी. दूर दक्षिण में पड़ता है। इसलिए देवेन्द्र हाण्डा सोचता है कि यह सिक्का पंजाब की किसी प्राचीन जगह से मिला है[10]।

2. पंजाब के रोपड़ से एन्टियाल्किडस का सिक्का प्रकाशित किया है।

अग्रभाग: केशव बंध धारी राजा का चित्र अंकन । और **''बैसिलियास नोकेफोराऊ एण्टियलकिडाऊ''** लेख अंकित हैं ।

पृष्ठभाग: ज्यूस सिंहासन पर बैठे हैं। उनके बायें हाथ में दण्ड है। दायें हाथ की हथेली पर नाइके देवी हैं। देवी के दायें हाथ में माला है, जिसे वह हाथी को पहना रही है। हाथी का केवल अग्रभाग प्रदर्शित है। **''महरजस जयधरस अंतियलकितस''** लेख लिखा है[11]।

हिन्द–युनानी सिक्का (चित्र–2)

3. फिलोक्सेनस के सिक्कें आधुनिक पंजाब[12] में कुभाहेड़ी (रोपड़) रोहोन और मच्छीवाड़ा से मिले तांबा के चौकोर प्रकार के प्राप्त हुए हैं।

अग्रभाग: कलगीदार हेलमेट पहने हुए राजा की हीरे की प्रतिमा, यूनानी लिपि में तीन तरफ लेख लिखा है **''महरजस अपडिहतस फिलसिनस''**

पृष्ठभाग: अपोलो के सिर से किरणें निकल रही हैं। खरोष्ठी लिपि में तीन तरफ लेख लिखा है **''बेसिलिऑस अनिकेटॉय फिलोक्जेनाय''**[13]।

हिन्द–युनानी सिक्का (चित्र–3)

4. हर्मियस ने तीन प्रकार के सिक्कें चलाए जिनमें अल्फा (α) प्रकार का सिक्का कनिंघम को सुनेत से प्राप्त हुआ[14]।

प्राप्ति स्थान सुनेत धातु चांदी, आकृति गोलाकार, व्यास 1 इंच, भार 145 ग्रेन हैं।

अग्रभाग: मुकुटधारी राजा की आवक्ष आकृति है। यूनानी लिपि में **''बेसिलिऑस सोटेरॉस हरमेआय''** लेख हैं।

पृष्ठभाग: ज्यूस बायें हाथ में दण्ड लिये हुऐ सिंहासन पर बैठा है। और उसने दायां हाथ फैला रखा है। खरोष्ठी लिपि में **''महरजस त्रतरस हरमेअस ''** लिखा है[15]।

हिन्द–युनानी सिक्का (चित्र–3)

भारतीय – शक शासकों के सिक्कें:

शक नामक बर्बर जाति को बैक्ट्रिया से ईसा पूर्व 126 के लगभग यूचियों ने हरा कर भगा दिया। उसके बाद शकों ने भारत के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र में व्यापत हिन्द–यूनानियों कि सता को समाप्त कर अपना निवास स्थापित किया। ईसा पूर्व 75 के लगभग शकों ने यूनानी शासक हिप्पोस्ट्रेटस को पराजित किया और सिन्धुक्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया[16]। शकों ने भारत में तक्षशिला, मथुरा और पश्चिमी भारत में अपना शासन स्थापित किया। शक मथुरा में राजस्थान से मालवा को पार करके पहुंचे। शक शासकों की मुद्राएँ कन्दहार उत्तरी बलुचिस्तान और पंजाब से प्राप्त हुई हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि शक शासकों की मुद्राएँ हिन्द यवन मुद्राओं के अनुकरण पर निर्मित हुई[17]। शक शासकों के सिक्कों का सर्वाधिक प्रचलित अग्रभाग जो प्राय: एजेज के बाद सभी शक शासको ने ग्रहण किया – **'दोड़ते घोड़े पर आरुढ़ राजा का अंकन'** है। जो कि हिन्द यवन सिक्कों पर देखे जा सकते हैं। इतिहासकारों ने मुद्राओं पर अकिंत खरोष्टी और ब्राह्मी अभिलेखों के आधार पर भारत में आक्रमण करने वाले शकों की दो शाखाएँ मनी है। पहली शाखा वोनोनोज और उसके उतराधिकारियों की थी जो कन्दहार, बलूचिस्तान और सीस्तान के प्रदेशों में शासन करती थी, तथा दूसरी शाखा शक राजा भावेश कि थी जो तक्षशिला पर शासन करते थे। एस. चट्टोपध्याय ने सिक्कों की खोज के आधार पर प्रमाणित करने की कोशिश

की है, कि पूर्वी पंजाब में रजुबल ने अपना शासन शुरु किया था[18]। भारतीय शक राजाओं में एजिज व एस्पवर्मन के सिक्के पंजाब के **अमृतसर, जानेर** से प्राप्त हुए हैं।

1. प्राप्ति स्थान अमृतसर धातु चाँदी, आकृति गोलाकार, भार 151 ग्रेन, व्यास 1 इंच हैं।

अग्रभाग: अश्वारूढ़ राजा का अंकन, यूनानी लिपि में **''बैसिलियास बैसिलियान मेगालाय एजाय''** लेख है।

पृष्ठभाग: पप्लस देवी हाथ में ताड़ पत्र लिए हुए है। खरोष्ठी लिपि में **''महरजस** रजतिरजस महतस अवस **''** अंकित है[19]।

भारतीय-शक सिक्का (चित्र-1)

हिन्द - पहल्व शासकों के सिक्कें:

भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग पर पहल्व प्रथम शताब्दी के आस-पास शासन करते थे। पहल्व वंश में गोन्डोफर्निज, अबदगास, आर्थेगैनिस. पैसोरेस, गोन्डोफर्निज II, आरसेसेस व सनबेस आदि राजा हुए । इनमें सबसे महत्वपूर्ण राजा गोन्डोफर्निज था, जो एजिज II का उत्तराधिकारी था[20] । जिसके सिक्कें पंजाब के संघोल[21], अजराम-जिला होशियारपुर, बरास-राजपुर पटियाला, राहीन रोहिदा-मलेरकोटला आदि बहुत से स्थानों से प्राप्त हुए हैं। जिनपर यूनानी व खरोष्ठी लिपियों का प्रयोग किया गया है। इन सिक्कों के अग्रभाग पर राजा का आवक्ष शरीर या घोड़े की पीठ पर बैठा हुआ राजा या सिंहासन पर बैठा हुआ राजा था। और पृष्ठभाग पर यूनानी देवता जैसे नाइक, पप्लस, ज्यूस को दिखा गया है । गोन्डोफर्निज के सिक्के हर्मियस, शक, सासानी तथा गुप्त सिक्कों के साथ सुनेत से कनिंघम[22] द्वारा खोजे गये है।

अग्रभाग: मुकुटधारी राजा की आवक्ष आकृति है।

पृष्ठभाग: पंखों वाली नाईका अपने दांये हाथ में पूष्प माला लिये हऐ, हथेली दिखा रही हैं। खरोष्ठी लिपि में **''महरजस गोन्डोफर्निज त्रतरस ''** लिखा है[23]।

कुषाण शासकों के सिक्कें:

यूची जाति की एक शाखा को कुषाण कहा जाता था । ये चीन के उच्च पश्चिमी क्षेत्र में निवास करने वाले एक खानाबदोश थे। मध्य एशिया की एक बर्बर जाति हूणों ने द्वितीय शताब्दी ई0 पूर्व के उत्तरार्ध में, इन पर आक्रमण कर इनहें अपने मूल निवास स्थान से विस्थापित होने के लिए बाध्य किया । यूचियों ने ईसा पूर्व 126 के लगभग शकों को बैक्ट्रिया से खदेड़ा। प्रथम शताब्दी ई0 में कुषाणों ने कुजुल के नेतृत्व में काबुल घाटी के दक्षिण में रहने वाले पहल्वों को पराजित किया। इस प्रकार भारत के उत्तर-पश्चिमी भू-भाग पर कुषाणों की सत्ता कायम हुई[24]। कुजुल कैडफिसिस प्रथम कुषाण राजा था जिसने यूनानी शासक हर्मियस को उखाड़ फेंका और तांबे तथा चांदी के सिक्कों की शुरुआत की।

विमकैडफिसिस, कुजुल कैडफिसिस का उत्तराधिकारी था। जिसने पहली बार भारत में सोने के सिक्के चलाए जो कि रोमन मानक के थे[25]। इसका उत्तराधिकारी कनिष्क था जिसने 78 से 101 ई0 तक शासन किया । कनिष्क ने सोने व तांबे के सिक्के बड़ी संख्या में चलाए कनिष्क का साम्राज्य काबुल घाटी से लेकर मथुरा तक फैला हुआ था । कनिष्क ने अपने सिक्कों पर द्वि भाषी लिपि को समाप्त करवा दिया, इसके सिक्कों पर 15-16 प्रकार के देवी देवता अंकित हुए हैं। इसके समय स्वर्ण सिक्कों के निर्माण में परिवर्तन हुए। कनिष्क ने केवल दीनार प्रकार के सिक्के बनवाये। उसने बेसिलियॉस वेसिलिऑन व शओननो शाओ उपाधि ग्रहण की[26] । कनिष्क से अगला कुषाण शासक वासिष्क था, लेकिन उसने अपने सिक्के नहीं चलाए। वासिष्क के उत्तराधिकारी हुविष्क ने सर्वाधिक प्रकार के सिक्के प्रचलित किए। इसके सिक्कों पर यूनानी, ईरानी व हिन्दू देवताओं को दिखाया गया है। उसके तांबे के सिक्कों पर राजा को विभिन्न अवस्थाओं में दिखाया गया है। पंजाब के कुतनवाल, पठानकोट व सुनेत, गुरदासपुर संघोल, अमृतसर, ब्रास (पटियाला) डेरा बाबा नानक, कुम्भाहेड़ी, जानेर, रोपड, नुरपूर, सुनाम, सियालकोट आदि स्थानों से कनिंघम[27] को कुषाण सिक्के प्राप्त हुए हैं। इन स्थानों से प्राप्त सिक्कों का विवरण इस प्रकार है-

1. विम कैडफिसिस का सिक्का

प्राप्ति स्थान संघोल[28] धातु तांबा, आकृति गोलाकार, व्यास 2.70 सें. मीं. हैं।

अग्रभाग: राजा को खड़ी मुद्रा में दिखाया गया है, वह हैलमेट व लम्बा कोट पहने हुए है और दायें हाथ से अग्नि में आहुति डाल रहा है । यूनानी लिपि में **''बैसिलियास ऊएमो कैडफिसेस''** लेख है।

पृष्ठभाग: शिव अपने वाहन नन्दी के आगे खड़े हुए हैं । उनके दायें हाथ में त्रिशूल हैं। बायां कन्धा नन्दी पर रखा है। देवी हाथ में ताड़ पत्र लिए हुए है। खरोष्ठी लिपि में **''महरजस राजतिरजस सर्वलोग ईश्वरस्य महेश्वरस्य विम कडफिस त्रातरस''** अंकित[29] है

कुषाण शासक विम कैडफिसिस का सिक्का (चित्र-1)

2. कनिष्क के सिक्कें

1. प्राप्ति स्थान संघोल[30] धातु तांबा, आकृति गोलाकार, व्यास 0.9 इंच भार 128 ग्रेन हैं।

अग्रभाग: राजा स्थानक मुद्रा में है, उसने लम्बी नुकीली टोपी, लम्बा कोट व पायजामा डाल रखा है। बायें हाथ में माला, दायें हाथ से अग्नि में आहुति डाल रहा है। यूनानी लिपि में

''बैसिलियस बैसिलयान कनिष्काय'' लेख है ।

पृष्ठभाग: यूनानी पवन देवता, बायों तरफ दौड़ते हुए, एक हाथ में वस्त्रों का छोर पकड़े हुए है, दायीं तरफ कैडफिसिस चिन्ह बना हुआ है[31]।

कुषाण शासक कनिष्क का सिक्का (चित्र–1)

2. बुद्ध प्रकार का सिक्का धातु तांबा, आकृति गोलाकार, व्यास 0.8 इंच और भार 109.2 ग्रेन हैं।

अग्रभाग: राजा गोल टोपी, टोप व पतलून पहने दिखाया गया है। राजा के दायें हाथ में राजदण्ड व बायों हाथ वक्ष पर है।

पृष्ठभाग: बुद्ध को खड़े हुए दिखाया गया है। वह प्रभामण्डल से युक्त है । उनके हाथ धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में हैं – लेख **''शकमनो बोयडो[32]''**

कुषाण शासक कनिष्क का सिक्का (चित्र–2)

3. हुविष्क का सिक्का प्राप्ति स्थान संघोल धातु तांबा, आकृति गोल, व्यास 2.35 सें.मी. है।

अग्रभाग: राजा स्थानक मुद्रा में है। बायां हाथ कमर पर रखे हुए है, राजा के कन्धों से अग्नि शाखाएं निकल रही है और दायां हाथ तलवार की मूठ पर है।

पृष्ठभाग: पारसीक देवता औरलैग्नो है। इसके पीछे प्रभामण्डल है। इसकी एक भुजा कटी पर और दूसरी आगे बढ़ी हुई है[33]।

कुषाण शासक हुविष्क का सिक्का (चित्र–1)

4. वासुदेव का सिक्का धातु तांबा, आकृति गोल, भार 121 ग्रेन, व्यास 0.85 इंच है।

अग्रभाग: प्रभामण्डल युक्त राजा की खड़ी आकृति, लम्बा कोट व पायजामा डाले हुए, दाहिने हाथ से अग्नि में आहुति डालते हुए व बायां हाथ त्रिशूल लिए दिखाया गया है। मुद्रा लेख – **''शाओनानो शाओ बोजैडो, वासुदेव कोषाणो''** है।

पृष्ठभाग: दो भुजा वाले शिव, त्रिशूल व पाश सहित, पीछे नन्दी है और **''ओएशो''** लेख है[34]।

परवर्ती कुषाण

कुषाण स्वर्ण मुद्राओं का प्रवर्तन वासुदेव की मृत्यु के बाद भी जारी रहा । वासुदेव के पश्चात् कनिष्क I, वसिष्क एवं कनिष्क II शासक हुए इनके समय गान्धार क्षेत्र इनके हाथ से निकल गया। इन तीनों राजाओं का अस्तित्व भी हमें सिक्कों द्वारा पता चलता है[35] । वासुदेव II के सिक्कों में बेदी पर राजा बायें हाथ से त्रिशूल लिए खड़ा है, दायें हाथ के नीचे 'भ' लिखा है, जबकि पिछले भाग पर शिव नन्दी के साथ खड़ा हुआ है। शिव के दायें हाथ में पाश व बायें हाथ में त्रिशुल को दिखाया है। उनका नाम "ओएशो" लिखा है। पुरोभाग पर 'शाओ नानो शाओ' लिखा है[36]। मुद्राशास्त्रियों को पहले वासिष्क के सिक्कों की जानकारी नहीं थी। ये सिक्के अग्रभाग से देखने पर कनिष्क II के सिक्कों जैसे परन्तु इनके पृष्ठभाग की आकृति अलग थी। ओरदक्षो देवी को बडे सिंहासन पर बैठे हुए दिखाया गया है। उनके दायें हाथ में कार्नोकोपिया व बायें हाथ में रस्सी है। ओरदक्षो को कनिष्क । और हुविष्क के सिक्कों पर दिखाया गया है, परन्तु इनमें यह दायीं व बायीं तरफ खड़ी है। बैठी हुई ओरदक्षों को वासिष्क के सिक्कों में दिखाया गया है। प्रो0 मुखर्जी इस शासक को अंतिम साम्राज्यवादी शासक मानते हैं[37]। राजस्थान के झूंझनू से कषाणों शासकों का खजाना प्राप्त हुआ, जिनमें राजा के हाथ में चक्र दिखाया गया है, जबकि पुराने शासकों के हाथ में त्रिशूल था[38] । ये सिक्के अब तक प्रकाशित कुषाण सिक्कों से अलग हैं। इन सिक्कों पर मसरा नाम खुदा ह[39]। परवर्ती कुषाण शासकों के सिक्के मिलना बहुत ही दुर्लभ है। परतुं पंजाब से मिले ये सिक्के वासुदेव प्रकार हैं। वे सिक्के संघोल, बोन्डल (मलेरकोटला, जिला-संगरुर), बोनदाल (समराला, जिला-लुधियाना), चक गुजरान (जिला -होशियारपुर) रोपड़ आदि स्थानों मिले हैं[40]। कुछ सिक्को का वर्णन इस प्रकार है

1. प्राप्ति स्थान संघोल[41] धातु सोना, आकृति टेड़ी-मेड़ी, व्यास 2.24 सें.मी., भार 7. 600 ग्राम है।

अग्रभाग: राजा स्थानक मुद्रा में है। वेदिका के पास खड़ा हुआ है। उसने ऊँचा हैलमेट, लम्बा कोट व पतलून डाल रखा है, वह प्रभामण्डल से युक्त है। बायें हाथ के नीचे ब्राह्मी लिपि में **'वासु'** लिखा है।

पृष्ठभाग: देवी ओरदक्षों सिंहासन पर बैठी है, उसने एक हाथ मे कार्नोकोपिया व दूसरे में कुल्हाड़ी पकड़े हुए है (?) यूनानी लिपि में अस्पष्ट लेख है - ओरदक्षो।

2. प्राप्ति स्थान संघोल[42] धातु सोना, आकृति गोलाकार, व्यास 2.11 सें.मी., भार 7. 790 ग्राम है।

अग्रभाग: राजा को लम्बा कोट-पैंट व लम्बा नुकीला टोप पहने हुए दिखाया गया है। उसने एक हाथ में भाला पकड़ रखा है। राजा अग्निवेदिका के पास खड़ा हुआ है, तथा उसमें आहुति दे रहा है। राजा के दायें पैर के निकट खरोष्ठी में **'पु'** और ब्राह्मी में **'था'**

व **'वी'** लिखे हुए हैं । यूनानी लेख **''शाओ नानो शाओ, बेजष्को कोषाणों''** अंकित है।

पृष्ठभागः प्रभामण्डल से युक्त देवी को सिंहासन पर बैठे हुए दिखाया गया है व उसके पैर चटाई पर रखे हुए हैं, उसने एक हाथ में भाला व दूसरे में कॉर्नुकोपिया पकड़ रखा है। ऊपरी हिस्से में दायीं तरफ चिन्ह बना हुआ और बाहरी अक्षर **'था'** दिखाई दे रहा है। नीचे लेख – ओरडोक्शो अंकित है।

किदार कुषाण सिक्कें

कुषाणों की एक जाति के रुप में प्रसिद्ध हुए, किदार कुषाणें के एक राजा कषन को कुछ विद्वान कुषन अनुमान करके, केदार को कुषाणों की शाखा प्रमाणित करते हैं । वस्तुतः **'कषण',** कुषाणों से भिन्न कोई कबीला रहा होगा। उस कबीले के प्रमुख के नाम पर उतरवर्ती शासकों को केदार के नाम से जाना गया। इनकी पहचान सिक्कों के आधार पर भी कि जा सकती है जिनपर लगा शीर्षक **'कुषाण'** है[43]। ये सिक्के कश्मीर और पंजाब से लेकर पूर्व में कन्नौज व कौशाम्बी तक प्राप्त हुए हैं[44]। इन्होंने तीन प्रकार के सिक्के चलाए

(क) सोने के सिक्के कुषाण प्रकार के हैं जिनपर लेख ब्राह्मी लिपि में है।

(ख) चांदी के सिक्के सासानी प्रकार के हैं, इन पर सासानी नरेश शापुर द्वितीय एवं कुशान शाह वहरान की मुद्राओं का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है।

(ग) ताबें के सिक्के कुषाण और सासानी वंशों जैसे चलाए गए[45] ।

इनके चांदी के सिक्कों के अग्रभाग पर राजा का वामाभिमुख आवक्ष अंकन है। शासक के सिर के दोनों और किदार कुषाण लिखा है। मुद्राओं के पृष्ठभाग पर सासानी अग्निकुण्ड का अंकन है। स्वर्ण मुद्राओं के अग्रभाग पर राजा स्थानक मुद्रा में है, राजदण्ड धारण किये हुए दाहिने हाथ से वेदिका में आहुति डालते हुए राजा का अंकन है। राजा के बायें हाथ के नीचे ब्राहमी में 'केदार' लेख अंकित हैं। राजा के दाहिने हाथ के नीचे 'कपन' एवं बायें हाथ के बाहर 'कुषण' लेख अंकित है । पृष्ठभाग पर देवी ओरदक्षों का चित्रण है[46] । पंजाब क्षेत्र से मिले सिक्कों से हमें विभिन्न राजाओं जैसे– श्री सुवयस, श्री कृतवीर्य, सलोणवीर, श्री प्रताप, श्री विग्रह देव, भास्वन आदि राजाओं के नाम मिले हैं[47] । किदार कुषाणों का एक सोने का सिक्का संघोल से प्राप्त हुआ है।

धातु सोना, व्यास 2.15 सें.मी., आकृति गोल, भार 7.6 ग्राम है।

अग्रभागः स्थानक मुद्रा में राज दण्ड लिये हुए दाहिने हाथ से वेदिका में आहुति डालते हुए राजा का अंकन है। राजा के बायें हाथ के नीचे ब्राह्मी **'केदार'** लेख है। राजा के दाहिने हाथ के नीच **'कपन'** लिखा है।

पृष्ठभागः कमल पर देवी बैठी हुई है। यह देवी शायद ओरदक्षो है[48]।

हूण सिक्कें

हूण मध्य एशिया कि एक विदेशी जाति थी। ये ऑक्सस क्षेत्र और ईरान होकर भारत की तरफ स्थानांतरिक हुए थे । पाँचवीं शदी ई0 के पूर्वार्द्ध में हूणों ने अपनी शक्ति का विस्तार किया। स्कन्द गुप्त ने उसका प्रतिरोध किया और हूणों को पराजित किया था। स्कन्दगुप्त

के पश्चात् पाँचवीं शताब्दी ई0 के अन्त में हूणों ने पश्चिमी भारत में पंजाब से लेकर मध्यदेश में मालवा तक का क्षेत्र विजित किया था[49] । पंजाब के संघोल[50] क्षेत्र से काफी संख्या में हूण सिक्के व मोहरें मिली हैं। पंजाब में रोपड़[51] एक ऐसा दूसरा स्थान है। जहां से हुण सिक्कें प्राप्त हुए हैं । स्मिथ[52] ने मिहिरदत्ता, प्रकाश दित्या और उदयादित्या आदि शासकों के सिक्के होशियारपुर जिले से प्राप्त किए। कनिंघम ने पश्चिमी पंजाब से मिले कुछ हूण सिक्के को प्रकाशित किया है, जिन पर बुगो, किन्गो, भाम्मा, पुरदित्या, श्री नरेन्द्रा आदि नाम मिलते हैं[53]। संघोल से प्राप्त सिक्कों पर तोरमाण, मिहिरकुल, भीमसेन, श्री वाला व श्री बलरामा आदि नाम मिलते हैं। इन प्रदेशों को विजित करने का कार्य तोरमाण के नेतृत्व में हूणों ने किया ।तोरमाण के उत्तराधिकारी मिहिरकुल ने अपनी राजधानी साकल (वर्तमान सिलायकोट) में बनाई । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद हूणों ने काफी लम्बे समय तक पंजाब में शासन किया । हुण सिक्कों के प्राप्ति स्थान इस बात की ओर संकेत करते हैं कि हूणों का प्रभाव रोपड़ क्षेत्र से पाण्डुसार अर्थात हरियाणा व राजस्थान तक था । प्रस्तुत शोध क्षेत्र से हूणों के सिक्के काफी बडी संख्या में मिले हैं। कुछ सिक्कें जी. बी. शर्मा[54] द्वारा इकट्ठे किए गए जिनको प्रो. ए. के. नारायण, द्वारा जे. एन. एस. आई. में प्रकाशित करवा जा चुका हैं ।

तोरमाण के सिक्कें

1. प्राप्ति स्थान संघोल[55], आकृति गोलाकार, व्यास 19.8 मिलीमीटर, भार 3.76 ग्राम हैं।

अग्रभाग: बिन्दुओं के घेरे में राजा का आवक्ष शरीर, राजा का सिर फैला हुआ है, उसके पीछे कुछ अक्षर (?) व सामने (ता ?) है।

पृष्ठभाग: सिक्के के मध्य में लम्बवत रेखा है, उसके ऊपर सूर्य और चक्र के चिन्ह बने हैं, ब्राह्मी लिपि में नीचे **'तोर'** लिखा है।

हूण शासक तोरमाण का सिक्का (चित्र-1)

मिहिरकुल के सिक्कें

1. आकृति गोलाकार, व्यास 21.0 मिलीमीटर, भार 3.4 ग्राम हैं।

अग्रभाग: राजा की आवक्ष आकृति है, सिर के ऊपर चक्र बना है, ब्राह्मी लिपि में **'श्री मिहिरकुल'** लिखा है।

पृष्ठभाग: सिक्के के मध्य भाग में लम्बवत रेखा है, ऊपर कूबड़धारी वृषभ को चलते हुए दिखाया गया है। ब्राह्मी लिपि में नीचे **'जयतु वृष'** लिखा है।

हूण शासक मिहिरकुल का सिक्का (चित्र–1)

2. धातु तांबा, आकृति टेढ़ी–मेढ़ी, व्यास 1.8 से.मी., भार 1.557 ग्राम हैं।
अग्रभागः बिन्दुओं के घेरे में राजा की आवक्ष आकृति है, उसने सिर पर मनकों से सजे हैलमेट को पहन रखा है, ब्राह्मी लिपि में कुछ अक्षर व दायीं तरफ कुद चिन्ह बने हुए है।
पृष्ठभागः मध्य की लम्बवत लाईन के ऊपर कूबड़धारी वृषभ और नीचे आधे भाग में ब्राह्मी लिपि में नीचे **'जयतु वृष'** लिखा है[56]।
संघोल से मिले मिहिर व तोरमाण के ज्यादात्तर सिक्कें पुनर्मद्रांकित मिले हैं। जिन पर तोरमाण का नाम लिखा है। कुछ विद्वानों का मत है कि मिहिर ने उन सिक्कों पर अपने पिता तोर का नाम लिखवाया है। दूसरा मत यह है कि तोर ने अपने पुत्र मिहिर का नाम लिखवाया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि शायद मिहिर ने अपने पिता द्वारा चलाए गए सिक्कों पर कुछ अन्य चिन्ह बनाए हो और अपने नाम को उन पर लिखवाया हो, जिस कारण सिक्कों पर पिता पुत्र दोनों का नाम मिलता है।
प्रकाशादित्या व उदयादित्य के सिक्के
पंजाब के होशियापुर जिले से खोजे गए कुछ सिक्कों के अग्रभाग पर राजा का आवक्ष दायीं तरफ मुंह किए हुए जिनमें ब्राह्मी लिपि में श्री प्रकाश दित्य लिखा हुआ है। स्मिथ ने इन सिक्कों को तोरमाण के साथ जोड़ा है। इन सिक्कों के दूसरी तरफ समान रूप से उदयादित्य लिखा हुआ है जिनको भी तोरमाण के साथ जोड़ा गया है। इन दोनों सिक्कों का वर्णन इस प्रकार है–
प्रकाशादित्या के सिक्का – प्राप्ति स्थान होशियारपुर, धातु तांबा, भार 1.49 ग्राम है।
अग्रभागः राजा का आवक्ष शरीर दायीं तरफ मुंह किए हुए, ब्राह्मी लिपी में **'जारा'** अंकित हैं।
पृष्ठभागः ऊपर सूर्य या चक्र और नीचे ब्राह्मी आलेख **'श्री प्रकाशादित्या'** है[57]।
उदयादित्या का सिक्का – प्राप्ति स्थान होशियारपुर, धातु तांबा, भार 1.97 ग्राम हैं।
अग्रभागः राजा का आवक्ष शरीर का अंकन। राजा के मुंह के सामने त्रिशुल (?)
पृष्ठभागः सिक्के के ऊपरी भाग में सूर्य या चक्र और नीचे ब्राह्मी में **'उदयादित्या'** लिखा हुआ
है।
निष्कर्षः संक्षेप में कहें तो प्रस्तुत शोध पत्र में विभिन्न विदेशी शासकों के सिक्कों का चित्रण किया गया है। ये सिक्कें भारत में 200 ईसा पूर्व से लेकर 200 ई0 सन् के मध्य

तक ढाले जाते रहे। विदेशी शासकों ने लगभग सभी धातुओं में सिक्कें जारी किए। जो कि पंजाब से विभिन्न शोधार्थीयों नें समय-समय पर खोजे जिनमें हिंद-यूनानी, शक-पहलवों, कुषाण व हूणों के सिक्कें प्राप्त है। इन सिक्कों पर अंकित अनेक प्रकार के प्रतीक और लेखन इन सिक्कों के समय और स्थान को समझने में मदद करते हैं। हिंद-यूनानी के सिक्कों से शुरू करते हुए, वर्तमान शोध पत्र शक-पहलवों, कुषाणों, व हूणों आदि के सिक्कों का विवरण प्रस्तुत करता है।

संदर्भ सूचि

[1] अजीत रायज़ादा, **भारतीय सिक्कों का इतिहास**, शारदा पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1993,पृ॰ 7.

[2] वही, पृ॰ 61.

[3] https://en.wikipedia.org/wiki/Punjab,_India

[4] ए. एन. लहरी, **कॉपस ऑफ इण्डो-ग्रीक कॉएन्स,** पोडार पब्लिशिंग हाउस, कलकत्ता, 1965,पृ॰ 1.

[5] एस. आर. गोयल, **इंडिजिनियस कॉइंस ऑफ अर्ली इंडिया,** कुसूमांजलि बुक वर्ल्ड, जोधपुर, 1995, पृ0 218.

[6] ओ. पी. सिंह व डी. पी. शर्मा, **ए स्टडी ऑफ कॉएन्स,** कावेरी बुकस, दिल्ली, 2011, पृ॰ 30-31.

[7] एस. आर. गोयल, **पूर्वोद्धत,** कुसूमांजलि बुक वर्ल्ड, जोधपुर, 1995, पृ0 220.

[8] एच.एल. हट्टन, **जर्नल ऑफ़ न्यूमिस्मैटिक सोसाइटी ऑफ़ इंडिया,** जिल्द -4, पृ0 146।

[9] डी. हांडा, **स्टडीज, इन इण्डियन कॉएन्स एण्ड सील्स,** संदीप पब्लिशिंग हाउस, 1985, पृ॰ 28.

[10] वही, पृ0 29.

[11] ए. कनिंघम, **कॉएन्स ऑफ अलेक्जेण्डर्स सक्सेसर्स इन द ईस्ट,** अर्गोनॉट पब्लिशिंग हाउस, 1969, पृ0 213 ।

[12] जी. बी. शर्मा, एण्ड मनमोहन कुमार, **कॉइन्स, सील्स एण्ड सिलिंग्स फॉम संघोल,** चंडीगढ़, 1986, पृ0 46.

[13] हैड आर. बी. व्हाइट, **इण्डो ग्रीक कॉएन्स, केटेलॉग ऑफ कॉएन्स इन द पंजाब म्यूजियम, लाहौर,** अंक - 1,1914.
पृ0 53.

[14] ए. कनिंघम, **आर्किलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया रिपोर्ट, वोल्यूम *XIV***, पृ0 40.

[15] हैड आर. बी. व्हाइट, **पूर्वोद्धत,** केटेलॉग ऑफ कॉएन्स इन द पंजाब म्यूजियम, लाहौर, अंक - 1,1914, पृ0 82.

[16] सन्तोष कुमार वाजपेयी, **ऐतिहासिक भारतीय सिक्कें,** दिल्ली, 1997, पृ0 170.

[17] राजवन्त राव व प्रदीप राव, **प्राचीन भारतीय मुद्रायें,** मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी, 1998, पृ॰ 125.

[18] एस. चट्टोपाध्याय,, शक इन इण्डिया, विश्व भारती शांतिनिकेतन, कलकत्ता, 1955, पृ॰ 37.

[19] हैड आर. बी. व्हाइट, **पूर्वोद्धत,** केटेलॉग ऑफ कॉएन्स इन द पंजाब म्यूजियम, लाहौर, अंक - 1,1914, पृ0 132.

[20] एस. आर. गोयल, **पूर्वोद्धत,** कुसूमांजलि बुक वर्ल्ड, जोधपुर, 1995, पृ0 234.

[21] हिंमाशु प्रभा रेय, **संघोल एण्ड आर्किलॉजी ऑफ पंजाब,** आर्यन बुक इंटरनेश्नल, 2010, पृ॰ 189-90.

[22] कनिंघम ए., **पूर्वोद्धत, वोल्यूम *XIV***, पृ0 65.

[23] हैड आर. बी. व्हाइट, **पूर्वोद्धत, केटेलॉग ऑफ कॉएन्स इन द पंजाब म्यूजियम, लाहौर,** अंक - 1,1914, पृ0 152.

[24] एस. आर. गोयल, **पूर्वोद्धृत,** कुसूमांजलि बुक वर्ल्ड, जोधपुर, 1995, पृ0 249.
[25] ए. बनर्जी,**जर्नल ऑफ़ न्यूमिस्मैटिक सोसाइटी ऑफ़ इंडिया,** जिल्द -13, पृ0 107-09।
[26] अजीत रायज़ादा, **पूर्वोद्धृत,** शारदा पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, 1993,पृ० 63.
[27] ए. कनिंघम, **पूर्वोद्धृत, वोल्यूम *V***, पृ0 154.
[28] जी. बी. शर्मा, एण्ड मनमोहन कुमार, **पूर्वोद्धृत,** चंडीगढ़, 1986, पृ0 18.
[29] हैड आर. बी. व्हाइट, **पूर्वोद्धृत, केटेलॉग ऑफ कॉएन्स इन द पंजाब म्यूजियम, लाहौर,** अंक -1, 1914, पृ0 188.
[30] जी. बी. शर्मा, एण्ड मनमोहन कुमार, **पूर्वोद्धृत,** चंडीगढ़, 1986, पृ0 19.
[31] एस. आर. गोयल, **पूर्वोद्धृत,** कुसूमांजलि बुक वर्ल्ड, जोधपुर, 1995, पृ0 277.
[32] ए. कनिंघम, **कॉएन्स ऑफ दि इंडो सिथीयनस, शक, एंड कुषाणा,** इंडोलोजिकल बुक हाउस, 1971, भाग-3,पृ019.
[33] जी. बी. शर्मा, एण्ड मनमोहन कुमार, **पूर्वोद्धृत,** चंडीगढ़, 1986, पृ0 19.
[34] [34] हैड आर. बी. व्हाइट, **पूर्वोद्धृत, केटेलॉग ऑफ कॉएन्स इन द पंजाब म्यूजियम, लाहौर,** अंक -1, 1914,पृ0 208.
[35] परमेश्वरी लाल गुप्त, **भारत की पूर्व-कालिक सिक्कें,** विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 1996, पृ० 213.
[36] **जर्नल ऑफ़ न्यूमिस्मैटिक सोसाइटी ऑफ़ इंडिया, *XXXIV***, पृ0 31-32.
[37] परमेश्वरी लाल गुप्त, **पूर्वोद्धृत,** वाराणसी 1996, पृ० 214.
[38] **न्यूमिस्मैटिक** डाइजेस्ट वोल्यूम - V, पृ० 34.
[39] परमेश्वरी लाल गुप्त, **पूर्वोद्धृत,** वाराणसी 1996, पृ० 224.
[40] जी. बी. शर्मा, एण्ड मनमोहन कुमार, **पूर्वोद्धृत,** चंडीगढ़, 1986, पृ0 23-46.
[41] वही पृ0 46.
[42] वही पृ0 23.
[43] परमेश्वरी लाल गुप्त, **पूर्वोद्धृत,** वाराणसी 1996, पृ० 230.
[44] सन्तोष कुमार वाजपेयी, **पूर्वोद्धृत,** दिल्ली, 1997, पृ0 206.
[45] राजवन्त राव व प्रदीप राव, **पूर्वोद्धृत,** मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी, 1998, पृ० 184.
[46] **न्यूमिस्मैटिक** क्रॉनिकल, 1889, प्लेट VI, पृ० 34.
[47] भास्कर चट्टोपाध्याय, **द एज ऑफ द कुषाणाज- ए न्यूमिस्मैटिक्स स्टडी,** कलकत्ता 1967, पृ० 116.
[48] जी. बी. शर्मा, एण्ड मनमोहन कुमार, **पूर्वोद्धृत,** चंडीगढ़, 1986, पृ0 24.
[49] सन्तोष कुमार वाजपेयी, **पूर्वोद्धृत,** दिल्ली, 1997, पृ0 254.
[50] हिंमाशु प्रभा रेय, **पूर्वोद्धृत,** आर्यन बुक इंटरनेशनल, 2010, पृ० 176.
[51] **जर्नल ऑफ़ न्यूमिस्मैटिक सोसाइटी ऑफ़ इंडिया, *XXXII***, पृ0 35-39.
[52] **जर्नल ऑफ़ रॉयल ऐशयटिक सोसाइटी, ग्रेट ब्रिटेन एण्ड आयरलैण्ड,** पब्लिशिंग हाउस एल्बमर्ले स्ट्रीट लंदन, 1907,
पृ0 91-92.
[53] ए. कनिंघम,**लेटर इंडो-सीथियन,** लंदन, 1893, पृ0 116.
[54] जी. बी. शर्मा, एण्ड मनमोहन कुमार, **पूर्वोद्धृत,** चंडीगढ़, 1986, पृ0 30-31.
[55] वही, पृ0 31.
[56] जी. बी. शर्मा, एण्ड मनमोहन कुमार, **पूर्वोद्धृत,** चंडीगढ़, 1986, पृ0 38-41.
[57] **जर्नल ऑफ़ रॉयल ऐशयटिक सोसाइटी, ग्रेट ब्रिटेन एण्ड आयरलैण्ड,** पब्लिशिंग हाउस एल्बमर्ले स्ट्रीट लंदन, 1907,
पृ0 96.